RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 जनवरी 2021

बाल विज्ञान पत्रिका, जनवरी 2021

चकमक

नए साल की नई नमस्ते

मूल्य ₹50

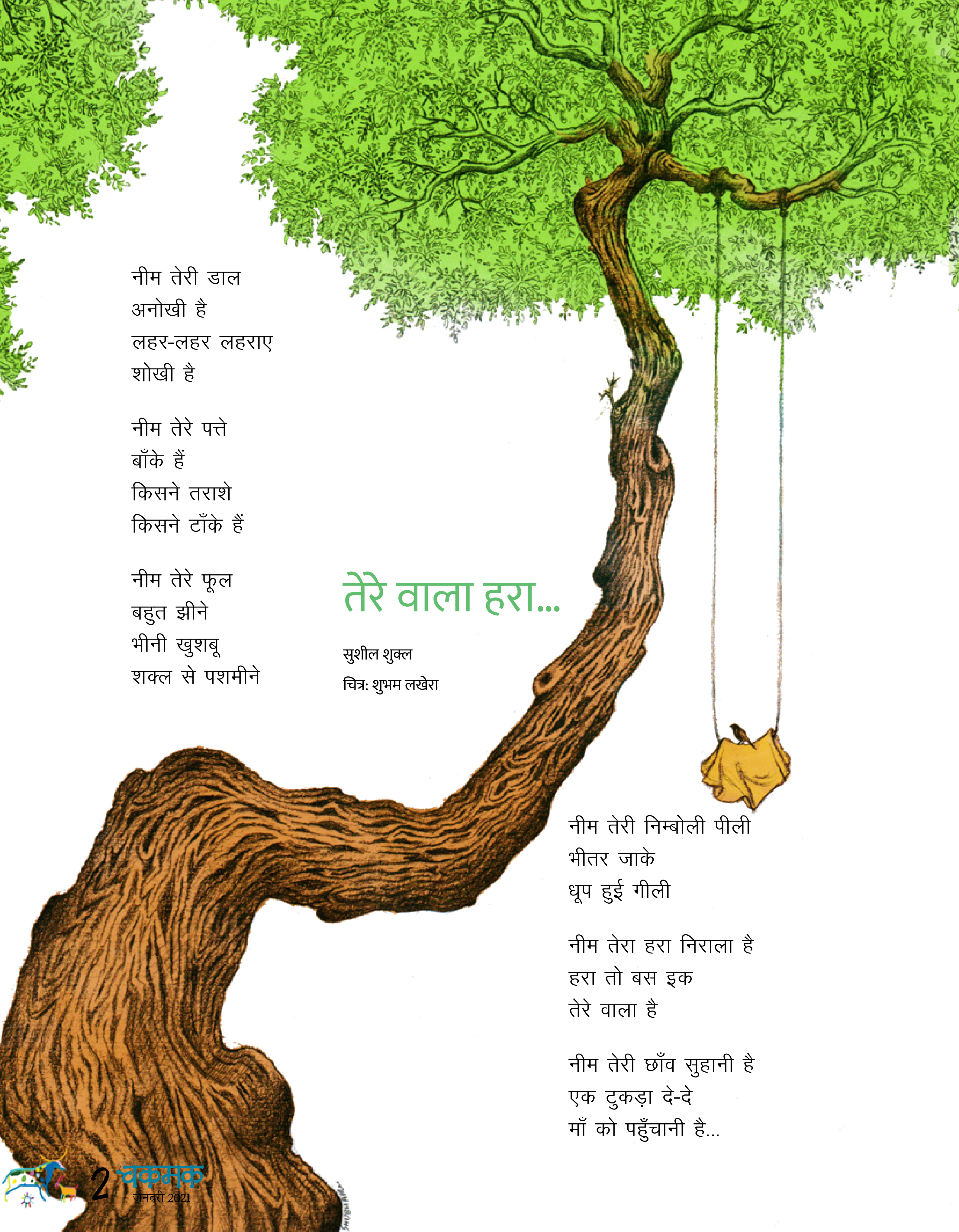

तेरे वाला हरा...

सुशील शुक्ल

चित्र: शुभम लखेरा

नीम तेरी डाल
अनोखी है
लहर-लहर लहराए
शोखी है

नीम तेरे पत्ते
बाँके हैं
किसने तराशे
किसने टाँके हैं

नीम तेरे फूल
बहुत झीने
भीनी खुशबू
शक्ल से पशमीने

नीम तेरी निम्बोली पीली
भीतर जाके
धूप हुई गीली

नीम तेरा हरा निराला है
हरा तो बस इक
तेरे वाला है

नीम तेरी छाँव सुहानी है
एक टुकड़ा दे-दे
माँ को पहुँचानी है...

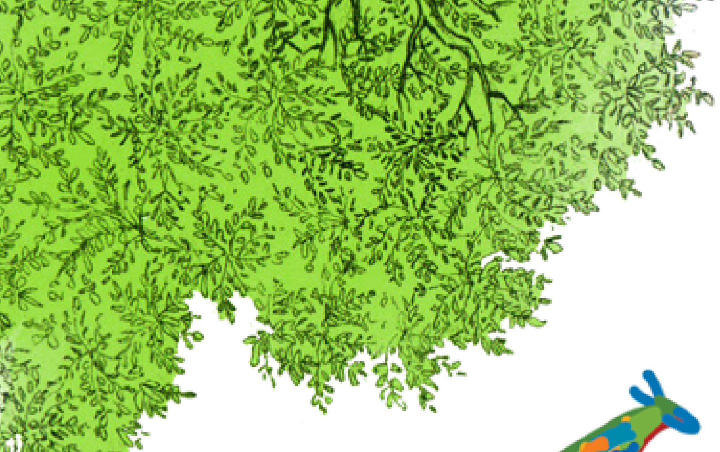

अंक 412 ● जनवरी 2021

चकमक

नया साल मुबारक हो!

इस अंक के साथ नए साल का एक पुलआउट कैलेण्डर भी है। तुम इसे निकालकर जहाँ चाहो वहाँ लगा सकते हो। यह कैलेण्डर तुम्हें कैसा लगा, हमें ज़रूर लिखना।

इस बार

तेरे वाला हरा... – सुशील शुक्ल – 2
काँकेर का भालू – चन्दन यादव – 4
भूलभुलैया – 7
छिपकली को लगी ठण्ड – के. आर. शर्मा – 8
क्यों-क्यों – 10
तालाबन्दी में ... – होमवर्क – रोशनी खातून – 14
बड़ों का बचपन – मोज़े – निधि सक्सेना – 16
तुम भी जानो – 18
ट्रेनें – मंगलेश डबराल – 27
एक कवि का सफर – लोकेश मालती प्रकाश – 27
मिमिक्री – नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउंडेशन – 28
स्कूल खोलें या ना खोलें – सुशील जोशी – 30
मेरा पन्ना – 33
माथापच्ची – 36
चित्रपहेली – 38
मेरा पन्ना – 40
नए साल की नई नमस्ते – प्रभात – 44

पिछले अंक की 'एक पत्ते का जीवन' प्रतियोगिता वेदान्त एकैडमी, मनावर की सातवीं कक्षा में पढ़ने वाली जिया गोयल ने जीती है। जिया को *चकमक* की तरफ से जल्द ही एक किताब भेजी जाएगी।

सम्पादन
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी
सजिता नायर

सहायक सम्पादक
मुदित श्रीवास्तव

वितरण
झनक राम साहू

डिज़ाइन
कनक शशि

डिज़ाइन सहयोग
इशिता देबनाथ बिस्वास

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

आवरण चित्र : iStock.com/ Kudryashka

एक प्रति : ₹ 50
वार्षिक : ₹ 500
तीन साल : ₹ 1350
आजीवन : ₹ 6000
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026
फोन: +91 755 2977770 से 3 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

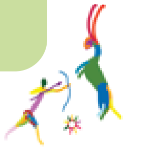

काँकेर का भालू

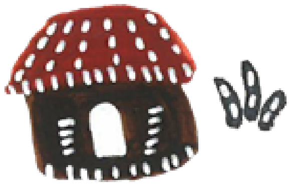

चन्दन यादव
चित्र: अमृता

काँकेर से लगे हुए पहाड़ पर एक भालू रहता था। पहाड़ की चोटी से इन्सानों की बस्ती नज़र आती थी। भालू अक्सर वहाँ जाकर बैठ जाता और आँखों से दूरबीन सटाकर काँकेर के लोगों को देखता रहता। उसे लगता था वह इन्सानों के बारे में दूसरे भालुओं से कहीं ज़्यादा जानता है।

और इसमें कोई शक की बात भी नहीं थी। वह सच में जानता था।

एक बार भालू के बालों में बहुत जूँ पड़ गईं। वो दिन भर बन्दर की तरह खुजाता रहता। भालू किसी तरह जूँ से पीछा छुड़ाना चाहता था। उसने देख रखा था कि काँकेर के लोगों के सिर्फ सिर पर ही बाल हैं। इत्ती-सी जगह में भी जूँ पड़ती रहती है। जिसे वे कंघी की मदद से निकालते दिखाई देते रहते हैं। उसे भी किसी तरह एक कंघी मिल जाती तो जुँओं से जान छूटती। पर पहाड़ पर कंघी कहाँ से मिलती।

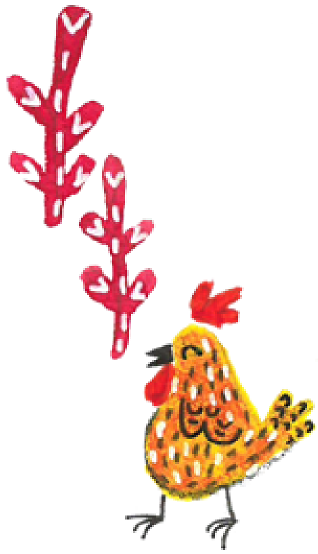

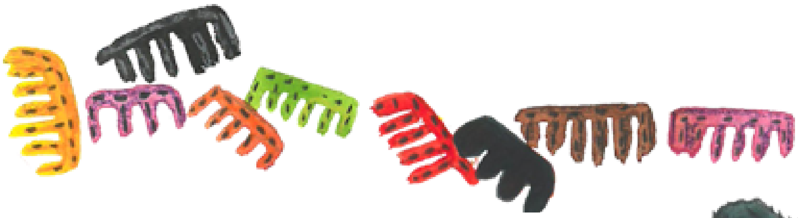

संयोग की बात। एक दिन जंगल के रास्ते से एक कंघी बेचने वाला गुज़रा। भालू उसके पास जाकर बोला, “मुझे एक अच्छी-सी कंघी दे दो, बहुत जूँ हो गई है।”

बदले में कंघी बेचने वाले ने भालू को आँखें फाड़कर देखा। उसने कुछ कहने के लिए होंठ भी हिलाए पर आवाज़ ही नहीं निकली। अगले ही पल वह सारी कंघियाँ वहीं छोड़कर भाग गया। भालू कुछ समझ ही नहीं पाया कि वो क्या कहना चाहता था। बहरहाल भालू इतनी सारी कंघियों का क्या करता। उसने एक अच्छी-सी कंघी ली और घर आ गया। कंघी कमाल की थी। भालू ने उससे बालों के सारे जूँ निकाल डाले।

इसी के कुछ दिनों बाद की बात है। गर्मियों की एक शाम भालू दूरबीन आँखों से सटाए काँकेर के नज़ारे ले रहा था। उसने देखा कि एक मोटा आदमी मुँह से बोतल सटाए कुछ पी रहा है। भालू को पता था कि वो कोल्ड ड्रिंक पी रहा है। मोटे आदमी को कोल्ड ड्रिंक पीने में वैसा ही मज़ा आ रहा था, जैसा भालू को शहद खाने में आता था। अपनी दूरबीन से उसने कई बार लोगों को कोल्ड ड्रिंक लेते देखा था। इसलिए भालू को पता था कि कोल्ड ड्रिंक कैसे ली जाती है। भालू ने झोला उठाया और जा पहुँचा काँकेर। उसने देखा कि काँकेर का हर आदमी भागा जा रहा है। भालू ने सोचा – पहाड़ से तो सब ठीक दिख रहा था। ज़रूर कोई खास

बात होगी। पर अपने को क्या? वह कोल्ड ड्रिंक की दुकान पर पहुँच गया। दुकान वाला भी भालू को देखते ही चिल्लाता हुआ भाग गया। भालू समझ गया कि उसे ज़ोर की लगी होगी। उसने पैसे रखकर कोल्ड ड्रिंक की बोतल उठाई और चल दिया। घर आकर भालू ने बोतल खोलने की बहुत कोशिश की। पर वह खुली ही नहीं। तंग आकर भालू ने सोचा – भाड़ में जाए कोल्ड ड्रिंक, इससे तो अपना शहद ही भला।

तुमने भी देखा होगा। उसी समय से भालू कभी किसी कोल्ड ड्रिंक की दुकान पर नहीं जाते। और कंघी लेने जाने का तो सवाल ही नहीं उठता। पहाड़ पर ही इतनी सारी जो पड़ी हुई हैं!

भूल भुलैया

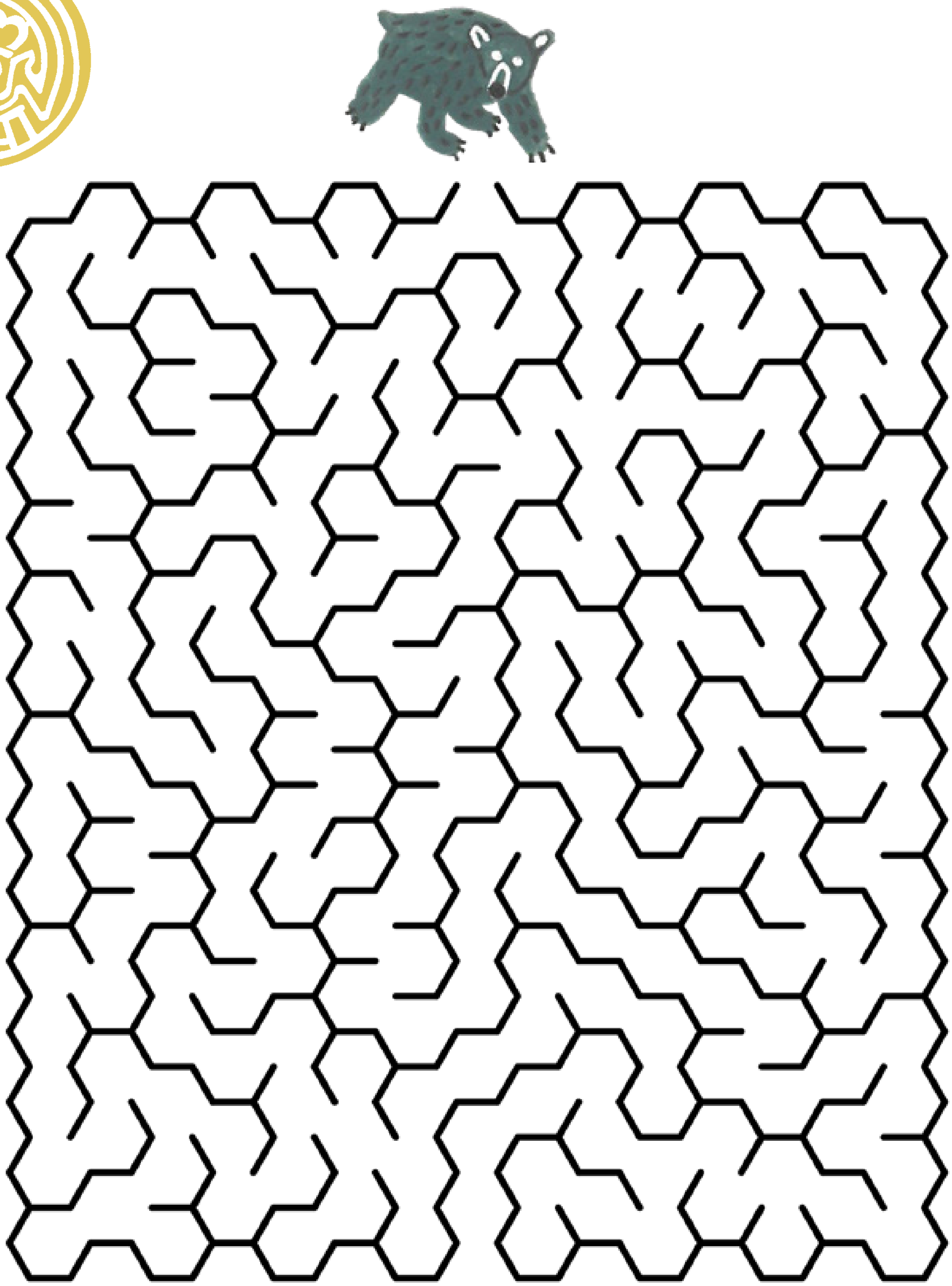

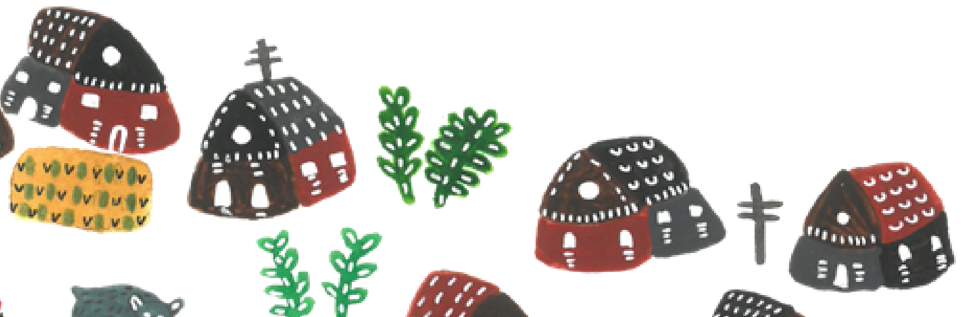

चित्र: अमृता

छिपकली को लगी ठण्ड

के. आर. शर्मा
चित्र: शुभम लखेरा

बात फरवरी की है। ठण्ड के दिन थे। मैं रात को परिवार के साथ कमरे में बैठा हुआ था। ढाई बरस की जुगनू फर्श पर छिपकली को देखकर तुतलाती भाषा में चिल्लाई, "छिपली!" जब मैंने अनसुना किया तो उसके पास एक ही रास्ता बचा था। उसने मेरा हाथ पकड़ा और खींचकर फर्श पर छिपकली की ओर मेरा ध्यान दिलाने लगी, "छिपली।"

मैंने छिपकली को पेंसिल छुआई। लेकिन वह टस से मस नहीं हुई। जुगनू कभी मेरी ओर देखती तो कभी छिपकली की ओर। मैंने उसे कहा, "छिपली बीमार हो गई है। इसे ठण्ड लगी है।" शायद उसे मेरी बात समझ में नहीं आई होगी। तो मैंने उससे कहा, "तुमको ठण्ड लगती है ना!" उसने "हाँ", कहा। "वैसे ही छिपकली को भी ठण्ड लगती है", मैंने उसे समझाया।

आम तौर पर छिपकली को मैंने फर्श पर बहुत ही कम देखा है। अगर कभी कीड़े-मकोड़ों को खाने फर्श पर आती भी है तो वह तुरन्त ही रेंगकर पास की दीवार पर चढ़ जाती है।

पहले तो मैंने सोचा कि कहीं छिपकली बीमार तो नहीं। फिर

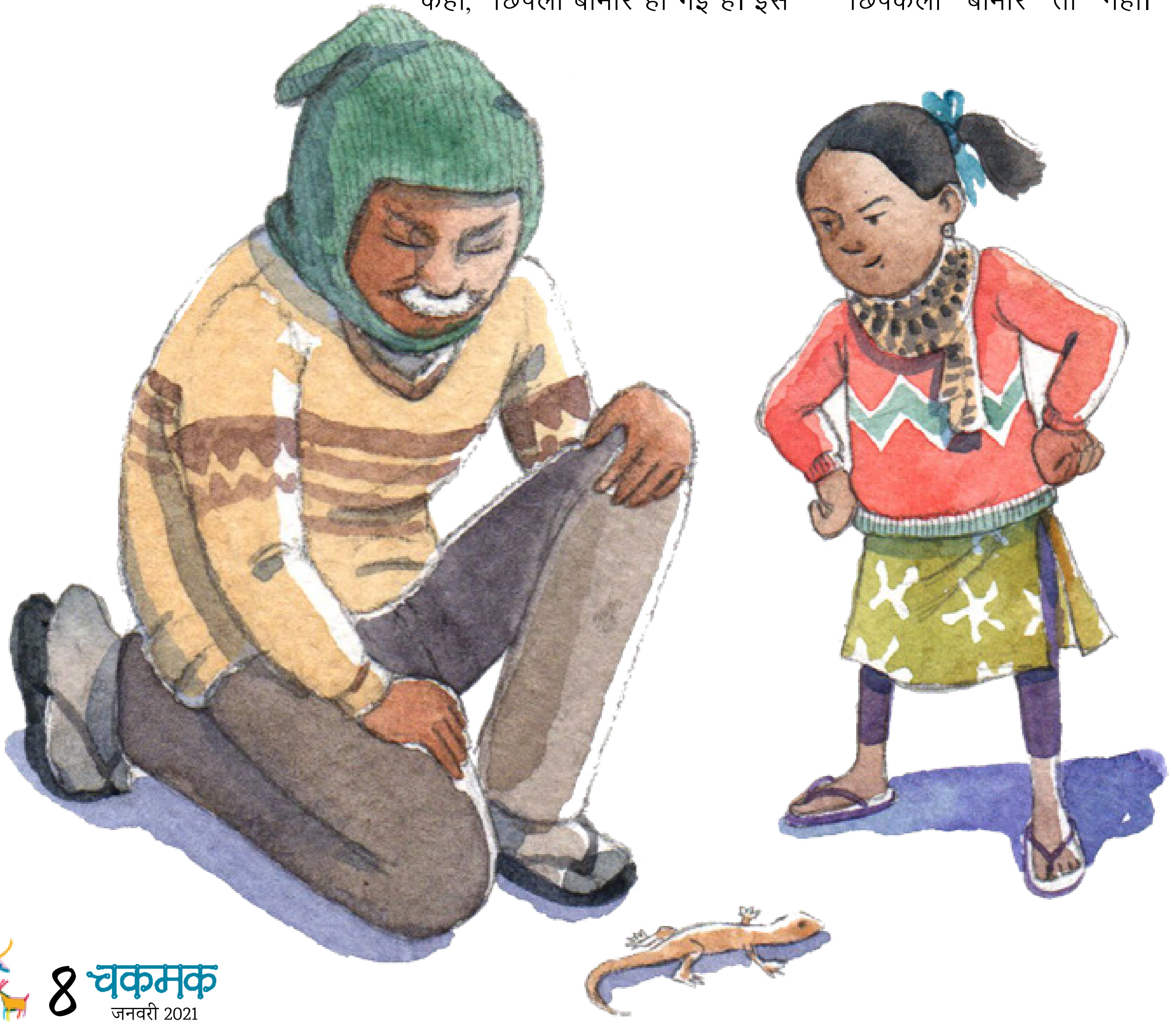

अनुमान लगाया कि छिपकली को ठण्ड ही लगी होगी। मैंने सोचा कि उसे हाथ से उठाऊँ। तभी ख्याल आया कि अगर छिपकली को पकड़ूँगा तो वह अपनी पूँछ से हाथ धो बैठेगी। तो मैंने आहिस्ते-से छिपकली को झाड़ू से दीवार के पास किया तो वह थोड़ी खिसकी।

अब क्या किया जाए मैं सोचने लगा। इसे बचाने का एकमात्र उपाय है कि इसे गर्मी दी जाए। उतनी गर्मी जिससे कि इसके शरीर का तापमान 26-35 डिग्री सेल्सियस के आसपास का हो सके। इतने तापमान पर ही इन छिपकलियों की जैविक क्रियाएँ चलती रहती हैं।

अगला सवाल था कि गर्मी कैसे दी जाए? मुझे एक तरकीब सूझी। हेयर ड्रायर गर्म हवा फेंकता है। अगर मैं हेयर ड्रायर की गर्म हवा छिपकली के शरीर पर नियंत्रित तरीके से डालूँ तो शायद उसे ठण्ड से निजात मिले। मैं हेयर ड्रायर ले आया और थोड़ी दूर से गर्म हवा उसके बदन पर डालने लगा। यह ध्यान में रखते हुए कि उसकी चमड़ी गर्म हवा से झुलस न जाए। अगर तुम छिपकली को ध्यान से देखोगे तो इसकी छिलकेदार चमड़ी काफी नरम और मुलायम होती है।

रुक-रुककर मैं छिपकली को हेयर ड्रायर से गर्मी देता रहा। लगभग 15 मिनट के बाद वह खिसकी और रेंगकर दीवार पर चढ़ गई। चूँकि ठण्ड अधिक थी इसलिए मैं दीवार के आसपास के हिस्से को गर्म करता रहा। मैं चाह रहा था कि छिपकली दरवाज़े की चौखट पर लगी तस्वीरों के पीछे दुबक जाए। कुछ और देर तक छिपकली को गर्मी देने की प्रक्रिया जारी रही। और फिर छिपकली तेज़ी-से रेंगकर तस्वीर के पीछे दुबक गई।

दरअसल, छिपकलियाँ और साँप वगैरह कड़ाके की ठण्ड में दरारों या दूसरे जानवरों के बनाए बिलों में दुबके रहते हैं। वहाँ ये ठण्ड से अपने आपको सुरक्षित रखते हैं। ये अपने शरीर के तापमान का नियंत्रण शरीर के बाहर के स्रोत से ही कर पाते हैं। तो ठण्ड में जब ये ऐसा नहीं कर पाते हैं तब छिप जाते हैं और चुपचाप बिना ज़्यादा हिले-डुले निष्क्रिय हो जाते हैं। ऐसे में इनके शरीर की प्रक्रियाएँ धीमी पड़ जाती हैं और इन्हें खाने की ज़रूरत नहीं लगती है। जैसे ही मौसम बदलता है ये अपने आप को गर्म करने निकल जाते हैं और शिकार भी करने लगते हैं।

उस दिन जुगनू और घर के बाकी सब लोगों को अच्छा लगा कि हमने एक छिपकली की जान बचाई।

पहले तो मैंने सोचा कि कहीं छिपकली बीमार तो नहीं। फिर अनुमान लगाया कि छिपकली को ठण्ड ही लगी होगी। मैंने सोचा कि उसे हाथ से उठाऊँ। तभी ख्याल आया कि अगर छिपकली को पकड़ूँगा तो वह अपनी पूँछ से हाथ धो बैठेगी।

क्यों क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था—

क्या देवों-राक्षसों की कहानियाँ सच्ची हैं या नहीं, और तुम्हें ऐसा क्यों लगता है?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपने जवाब लिख भेजना।

अगली बार के लिए सवाल है —

हम खर्राटे क्यों लेते हैं? और बड़ों की तुलना में बहुत कम बच्चे खर्राटे लेते हैं, ऐसा क्यों?

अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।

जवाब तुम हमें chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

चकमक
एकलव्य फाउंडेशन
जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश

देव-असुरों की कहानियाँ सच्ची होती हैं क्योंकि यह हमारे पुराणों में कही गई हैं। पुराणों की बातें हमेशा सच होती हैं।

रितिका पाटीदार, आठवीं, सेंट थॉमस एकेडमी, देवास, मध्य प्रदेश

मेरे हिसाब से ये कहानियाँ सच्ची नहीं होती हैं क्योंकि उनमें लोग जादू जैसा कर सकते हैं। अगर पहले के सब लोग जादू कर सकते हैं तो अब के लोगों में क्या कमी है जो वो जादू नहीं कर सकते?

रितिका, सातवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

बड़े लोग कहते हैं कि देवों-राक्षसों की कहानियाँ सच्ची होती हैं। मुझे ये कहानियाँ सच्ची लगती हैं। पहले ज़माने में राक्षस होते थे। अब के ज़माने में इन्सान जो बुरा काम करते हैं वो राक्षस होते हैं। और जो अच्छा काम करते हैं वो फरिश्ते होते हैं।

इकरा अंसारी, तीसरी, के के एकैडमी, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

मुझे भगवान पर विश्वास है क्योंकि एक बार मैं अपने गाँव गई थी। तब हमारे घर में जामारी (पूजा) थी। उसमें घर के बहुत लोगों पर देवता पड़ता है। और जब वो हमें टीका लगाते हैं तो हमारी तबीयत ठीक हो जाती है।

मनीषा, चौथी, मंज़िल संस्था, दिल्ली

सच्ची नहीं है क्योंकि अगर सच्ची होतीं तो देव और राक्षस कहाँ हैं, और अगर हैं भी तो सामने आते क्यों नहीं?

रितेश, चौथी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

मुझे लगता है कि ये कहानियाँ सच्ची नहीं हैं। यह सब बकवास है। जैसे कि औरतें करवा चौथ का व्रत करती हैं। शाम को तोड़ देती हैं। दूसरे दिन पति ने पत्नी को गाली दे दी और रोज़ दोनों के बीच लड़ाई हो रही है तो ऐसे व्रत रखने का क्या फायदा होता है उन औरतों को। बिना मतलब के अपनी तबीयत खराब कर देती हैं। मैं तो इन देवी-देवताओं को नहीं मानती हूँ। और राक्षसों को तो बिलकुल भी नहीं मानती हूँ क्योंकि मुझे राक्षसों से डर लगता है।

प्रचिता, सातवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

मुझे नहीं लगता कि ये कहानियाँ सच्ची हैं। मगर हाँ, हम सब भगवान की पूजा करते हैं। आरती उतारते हैं। किसलिए? क्योंकि हम कहीं ना कहीं यह मानते हैं कि भगवान ने हमें बनाया है। मतलब कि भगवान ने पूरी दुनिया बनाई है। तो फिर राक्षसों को भी तो भगवान ने ही बनाया है। मेरा यह मानना है कि भगवान एक हैं, चाहे हम उसे भगवान कहें, अल्लाह कहें या यीशू। अगर भगवान के पास इतनी ताकत है कि उन्होंने इतना कुछ बनाया तो फिर उनकी बराबरी का कौन हो सकता है

मोहम्मद इस्माइल, छठवीं, के के एकैडमी
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

चित्र: रितु झा, पाँचवीं, प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन, दिल्ली

मुझे राक्षसों की, भूतों की कहानियों पर विश्वास नहीं है। मुझे भगवान की कहानियों पर भी विश्वास नहीं है। क्योंकि मैंने भूत, राक्षसों व भगवान को कभी नहीं देखा।

मैमुना, तीसरी, एसडीएमसी स्कूल, हॉज़ खास, दिल्ली

चित्र: गौरी मिश्रा, चौथी, प्राथमिक विद्यालय धुसाह - प्रथम, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मुझे ये कहानियाँ सच्ची लगती हैं क्योंकि मेरी मम्मी को जब गुस्सा आता है तो मम्मी दीदी को रावण की बहन बोलती हैं।

राजवीर चौहान, सातवीं, केरला पब्लिक स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

देवता और राक्षस पहले भी होते थे और अब भी होते हैं। और उनकी कहानियाँ सच होती हैं। आज के समय में एनाबेला जैसी राक्षस हैं जो म्यूज़ियम में शीशे में कैद रहती है। हर पूर्णिमा की रात को शीशा हिलता है और राक्षसी चुड़ैल बाहर आती है। उसकी आँखों में खून भरा होता है और दाँत काले और बड़े हैं। उसके माथे पर, गाल पर चिटकने का निशान है। आज तक यह नहीं पता कि उसमें किसकी आत्मा घुसी है और क्यों। देवता के रूप में माता-पिता होते हैं जो एनाबेला जैसे राक्षसों से अपने बच्चों को बचाते हैं।

गौरी मिश्रा, चौथी, प्राथमिक विद्यालय धुसाह - प्रथम, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

देवों-राक्षसों की कहानियाँ मुझे सच्ची लगती हैं। क्योंकि रात में मुझे जब डरावने सपने आते हैं और डरकर नींद खुल जाती हैं, तो मैं देवों का स्मरण करती हूँ। तब मेरे अन्दर का सारा डर छू-मन्तर हो जाता है। इसके बाद मैं सुकून की नींद सो पाती हूँ। यह बिलकुल सत्य ही है कि देव और राक्षस दोनों ही होते हैं। रामायण, महाभारत की कथाएँ सच्ची हैं। तभी तो हम सब इन पर विश्वास रखते हैं। भगवान को याद करने मात्र से ही हमारे अन्दर सकारात्मक शक्ति का संचार होने लगता है।

जिया गोयल, सातवीं, वेदान्त एकैडमी, मनावर, धार, मध्य प्रदेश

देव-असुरों की कहानियों में मुझे बचपन से ही काफी दिलचस्पी रही है। मगर मैं इन कहानियों में बिलकुल यकीन नहीं करता। सोचने वाली बात है अगर यह सब एक समय में सच होता तो हम इन्सानों को कैसे पता चलता। मैं यह मानता हूँ कि ये कहानियाँ हमारे बुज़ुर्गों ने हमें प्रेरित करने के लिए बनाई थीं ताकि हम बुरे काम करने का अंजाम जान सकें।

स्वर्णदीप बामनिया, नौवीं, केन्द्रीय विद्यालय, देवास, मध्य प्रदेश

ये कहानियाँ सच्ची हैं। मुझे ऐसा इसलिए लगता है क्योंकि देवी-देवताओं ने ही तो दुनिया बनाई है। अगर देवी-देवता नहीं होते तो दुनिया बनी नहीं होती और हम जीवित नहीं रहते। और अगर देवी-देवता नहीं होते तो जिसको देवता आता क्या वह नाटक करते और जिस पर देवता आता है तो वो दूसरे लोग को टीका लगाकर देवता कैसे बनाते हैं। इस बात से तो पता चलता है कि देवता होते हैं। और उनकी कहानी सच्ची होती है।

हिमांशु आर्य, सातवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

यह कहानियाँ काल्पनिक हैं जो सिर्फ मनोरंजन के लिए बनाई जाती हैं। इन पर विश्वास नहीं किया जा सकता। अगर हमने मान भी लिया कि यह कहानियाँ सच्ची हैं तो इस बात को प्रमाणित कैसे कर सकते हैं। अगर देव और राक्षस होते भी थे तो क्या किसी ने भी उन्हें कभी देखा है। इसका जवाब है, नहीं। तो फिर उनकी कहानियाँ सच्ची कैसे हो सकती हैं।

आँचल, नौवीं, दीपालया लर्निंग सेंटर, दिल्ली

होमवर्क

रोशनी खातून

जब से लॉकडाउन हुआ है तब से सारे स्कूल बन्द हो गए हैं। सारे सब्जेक्ट के अलग-अलग व्हॉट्सऐप ग्रुप हैं और टीचर्स उसके एडमिन। सारे टीचर्स ने अपने-अपने हिसाब से ऑनलाइन आने की टाइमिंग दे दी है। कुछ टीचर्स ने तो एक ही टाइम पर ऑनलाइन आने की टाइमिंग दे रखी है और इसमें हम कुछ कर भी नहीं सकते। उनसे कहने का भी कोई फायदा नहीं है। इस बात पर उनका जवाब एक ही होता है कि जब मुझे टाइम मिलेगा तभी तो ऑनलाइन आऊँगी।

मैम टाइम पर ऑनलाइन होतीं, लिंक शेयर करतीं और काम जमा करने की टाइमिंग देकर ऑफलाइन हो जातीं। वह जब काम देकर जातीं तो यह बिलकुल भी नहीं सोचतीं कि इस होमवर्क को करते हुए हमें कितनी थकावट होगी और इसमें कितना एमबी इंटरनेट ज़ाया होने वाला है, मोबाइल का चार्ज कब तक चलेगा। मैम ने कुछ समझाया भी नहीं, बस कई सारे लिंक भेजकर लिख दिया कि सारे बच्चे पहला चैप्टर पूरा कर लेना और आज दोपहर के एक बजे तक सारा काम करके भेज देना।

हम सभी ने 'ओके मैम' लिखा और फिर ऑफलाइन हो गए। मैं भी ऑफलाइन होकर सारे लिंक एक साथ ही डाउनलोड करने में लग गई। इतने सारे लिंक एक साथ डाउनलोड करने में नेट भी स्लो चल रहा था। मैं बार-बार अपने फोन को एरोप्लेन मोड में करती, फिर नेट ऑन करती। इससे नेट तेज़ चलता है। ग्यारह बजे तक सारे लिंक डाउनलोड कर लिए। फोन की बैटरी देखी तो तीस परसेंट ही बची थी। मैंने फटाफट फोन को चार्ज पर लगाया और नहाने चली गई। नहाने के बाद काम करने लगी। एक साथ इतना सारा काम करने की वजह से हाथों में दर्द भी होने लगा था। एक बज चुके थे लेकिन काम अभी तक पूरा नहीं हुआ था। मैं काम करने में लगी रही। अन्य बच्चों की तरह मुझे भी अपना काम सबसे पहले भेजने की ज़िद थी। जो सबसे पहले काम भेजता था उसे ही मैम का रिप्लाई आता था, बाकियों को नहीं। मैं बस गर्दन झुकाए काम करने में जुटी हुई थी। करीब डेढ़ बजे मेरा काम पूरा हुआ। काम की फोटो खींची और फिर फटाफट छत पर चली गई। अपना सारा काम मैथ वाली मैम को भेज दिया।

अब दूसरे सब्जेक्ट की क्लास लगने वाली थी। क्लास थी इंग्लिश वाली मैम की। कुछ ही मिनटों में क्लास शुरू भी हो गई। उसी वक्त एसएसटी, साइंस और हिन्दी इत्यादि सारे सब्जेक्ट्स

तालाबन्दी में बचपन

यह एक नया कॉलम है जिसमें हर बार दिल्ली की अंकुर संस्था से जुड़े किसी बच्चे का संस्मरण होगा।

सरकार ने भले ही लॉकडाउन हटा दिया है लेकिन कोरोना के चलते बच्चों की ज़िन्दगियाँ तो अभी भी लॉकडाउन में हैं। कई सारे बच्चे अपने-अपने घरों-मोहल्लों में कैद हैं। स्कूल कब खुलेंगे यह भी पता नहीं। यह कॉलम ये जानने का एक ज़रिया है कि इस दौर में ये बच्चे क्या सोच रहे हैं, क्या कर रहे हैं...

की पढ़ाई भी शुरू हो गई। वैसे भी वह कोई पढ़ाई नहीं थी। सारे टीचर्स ने लिंक ही भेजे थे और टाइम बता दिया था कि कब तक हमें वह काम भेजना है।

मैं फिर से सारे लिंक एक साथ डाउनलोड करने में लग गई। ये लिंक डाउनलोड करना इतना आसान नहीं था। कमज़ोर फोन, धीमा इंटरनेट और फिर इतने सारे लिंक। डाउनलोड होने में जितना टाइम लगता उससे और भी ज़्यादा परेशानी और टेंशन बढ़ती जाती। दिल घबराने लगता कि कहीं काम छूट न जाए। कहीं कुछ गड़बड़ न हो जाए। जैसे-तैसे करके सारे लिंक्स डाउनलोड किए। फिर नीचे भागकर आई और कॉपी-फोन लेकर काम करने के लिए बैठ गई। मैं काम करने के लिए अभी बैठी ही थी कि पीटी वाली मैम ने वीडियो भेज दिया। मैं एक बार फिर से छत पर जाकर वो वीडियो डाउनलोड करने लगी। पीटी वाली मैम ने लिखा था कि तुरन्त ही मुझे वीडियो बनाकर भेजो। मैं फिर नीचे आई और अपनी बहन से कहा कि मेरा वीडियो बना दो। पीटी करते हुए अपना वीडियो बनवाया। जैसे ही वीडियो बना मैं फटाफट दोबारा ऊपर भागी और उस वीडियो को जल्दी से मैम को भेज दिया। फिर दोबारा नीचे आई और काम करने बैठ गई।

तीसरी मंज़िल पर बार-बार चढ़ना और उतरना थका देता है। मैं तो बस यही सोचती हूँ कि पता नहीं कब लाइफ नॉर्मल होगी।

दसवीं कक्षा में पढ़ने वाली रोशनी खातून अंकुर की नियमित रियाज़कर्ता है। वह दक्षिणपुरी, नई दिल्ली में रहती हैं।

मोज़े

निधि सक्सेना

चित्र: शुभांगी चेतन

स्कूल में बाकी बेमतलब की चीज़ों के बीच एक चीज़ होती थी प्रार्थना। वैसे तो पूरा स्कूल ही काफी बोर था लेकिन प्रार्थना तो...! अगर बोर चीज़ों का कोई कॉम्पिटीशन होता ना तो ये फर्स्ट आती! प्रार्थना से बचने का एक ही तरीका था धूप में चक्कर खाकर गिर जाना या गिर जाने की ऐक्टिंग करना। इस मामले में मैं अच्छी ऐक्टर थी या बुरी ये तो पता नहीं, लेकिन रिहर्सल मैं बिना नागा करती थी।

अक्सर कमज़ोरी महसूस होने पर मैं प्रार्थना से भेज दी जाती। और न सिर्फ खाली क्लासरूम बल्कि खाली स्कूल का भी मज़ा लेती! ऐसा नहीं था कि मैं कुछ खास करती थी, बस माहौल अलग होता था। अच्छा लगता था।

इसमें बस एक ही टेक्निकल समस्या थी कि अच्छी-खासी, हट्टी-कट्टी, लम्बी-चौड़ी लड़की ऐसे चकराकर कितना गिरेगी भला! तो... मैंने वो बैलेंस सीख लिया था कि प्रार्थना में कौन-से टीचर की ड्यूटी कब, कहाँ होती है और कब किसके सामने गिरना है, और किसके सामने नहीं गिरना। इसका पूरा गणित था।

जिन दिनों मुझे पूरी प्रार्थना के लिए रुकना पड़ता उन दिनों भी मैं उस प्रार्थना को बुदबुदाती नहीं। आँखें बन्द करते ही मेरे भीतर कुछ और चलने लगता। मेरी दुनिया बदल जाती। कभी-कभी सब दूसरी मुद्रा में आ जाते और मैं वैसे ही खड़ी रहती तो पीछे से कोई शिक्षक टपोली मारता। उन दिनों मुझे प्रार्थना के अन्तिम चरण की एक और बात पता चलती और वो थी यूनिफॉर्म की कड़ी चैकिंग।

जूते-मोज़ों तक की चैकिंग! तो बाकी सब तो जो था सो था, लेकिन मोज़ों की चैकिंग पर मुझे काफी खीज आती।

मुझे ये समझने में ही काफी देर लगी थी कि जूतों के भीतर मोज़े पहनना क्यूँ ज़रूरी है। सच बताऊँ तो आज भी ठीक-ठीक नहीं पता। इसलिए मैं अक्सर बिन मोज़ों के ही जूते पहनती हूँ। मोज़े पहनना मुझे एक काम जैसा लगता है।

लेकिन इसके अलावा भी मेरा मोज़ों से एक रिश्ता है, उनके खोने का रिश्ता। मोज़े जैसी चीज़ कोई जान-बूझकर क्यूँ खोएगा। मुझे पक्का पता है कि मोज़ों को खुद ब खुद खोने में महारत हासिल है। शायद उनकी खोज इसलिए ही हुई कि वे एक-दूसरे से बिछड़कर खो सकें। हमारे पास एक थैला है जिसमें खोए हुए मोज़ों के दूसरे न खोए हुए जोड़ीदार रखे हुए हैं। थैला अकेले-अकेले मोज़ों से अच्छा-खासा भरा हुआ है।

जब मैं कक्षा नौ में आई और हमारे स्कूल में सलवार-क़मीज़ पहनना कम्पलसरी हो गया, तब मैंने खोज की कि सलवार के नीचे दो रंग के मोज़े पहने जा सकते हैं। और किसी को पता भी नहीं चलेगा।

राइट पाँव में राइट मोज़ा, तो जब चैकिंग हो और मोज़ा दिखाने को कहा जाए तो बस राइट पाँव की सलवार उचकाकर दिखानी है। चार साल ये चला और कोई नहीं सोच पाया कि कोई लड़की दूसरे पाँव में दूसरे रंग का मोज़ा पहनकर भी घूम सकती है। कभी किसी ने एक पाँव देखने के बाद दूसरा पाँव देखने की माँग नहीं की।

घर में मोज़ों की कोई कमी थोड़ी है। नए ख़रीदे जा सकते हैं। लेकिन बोरिंग स्कूल में कुछ तो चैलेंज होना चाहिए। क्या पढ़ाई कम चैलेंजिंग है? वो उनका गेम है। ये मेरा। और स्कूल वाले मेरे गेम में फेल हो गए।

तुम भी जानो

एक विशाल हिमशैल का द्वीप से टकराव

2017 में अंटार्कटिका से एक विशाल हिमशैल (A68a) टूट गया था। दिल्ली शहर से पाँच गुना बड़ा यह हिमशैल धीरे-धीरे समुद्र में उत्तर की ओर जाने लगा। दिसम्बर 2020 में A68a का एक बड़ा हिस्सा उससे अलग हो गया। पहले से लगभग आधा होने के बावजूद भी वह कुछ 2500 वर्ग किलोमीटर बड़ा है और नुकसान के काबिल है। कुछ ही दिनों में वह दक्षिण अटलांटिक महासागर के साउथ जॉर्जिया द्वीप से टकराने वाला है। द्वीप पर 30 शोधकर्ताओं के अलावा वन्यजीव भी रहते हैं। इनमें से पेंग्विन और सील द्वीप से समुद्र में तैरकर अपने और अपने बच्चों के खाने का इन्तज़ाम करते हैं। डर इस बात का है कि इस हिमशैल के द्वीप से टकराने पर यह रास्ता उनके लिए बन्द हो जाएगा।

टॉयलेट में मिलता है खाना

जापान के मॉडर्न टॉयलेट रेस्त्रां का इंटीरियर पूरी तरह टॉयलेटनुमा है। फर्श से लेकर दीवारों तक हर जगह तुम्हें टॉयलेट का लुक दिखेगा। टेबल पर सलाद रखने के लिए फ्लश लैट्रिन की सीट तो बैठने के लिए कमोड बने हुए हैं। यहाँ तुम जो भी ऑर्डर करो वेटर उसे कमोड, बाथटब, वॉश बेसिन, बकेट आदि के आकार के बने बाउल में लाकर देंगे। यही नहीं प्लेट का आकार भी लैट्रिन की सीट जैसा ही होता है। अब तुम सोच रहे होगे कि आखिर ऐसे रेस्त्रां में खाना खाने जाता कौन होगा। तो हम तुम्हें बता दें कि यह जापान के टॉप रेस्त्रां में से एक है, और इसके मालिक ने अपने रेस्त्रां ताईवान और हांगकांग में भी खोले हैं!

कागज़ से नहीं, कपास से बनते हैं नोट

भारत का रुपया हो या यूरोप का यूरो या फिर अमेरिका का डॉलर आम तौर पर लोग समझते हैं कि नोट कागज़ (काठ की लुगदी) से बनाए जाते हैं। ये सब नोट कागज़ से नहीं बल्कि कपास से बनते हैं। भारत सहित कई देशों में नोट बनाने के लिए कपास को कच्चे माल की तरह इस्तेमाल किया जाता है। कागज़ की बजाय कपास ज़्यादा मुश्किल हालात सह सकता है। कपास के रेशे के साथ लिनैनि नामक फाइबर और अन्य कुछ रसायनों को मिलाया जाता है जो नोट बनाने वाले कागज़ को उम्रदराज़ बनाते हैं।

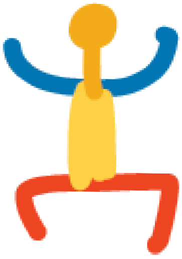

2021

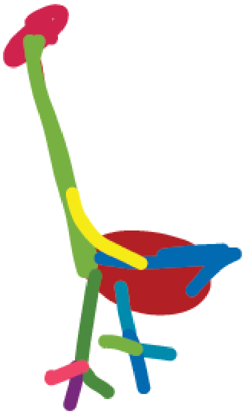

जुलाई

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

अगस्त

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

सितम्बर

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

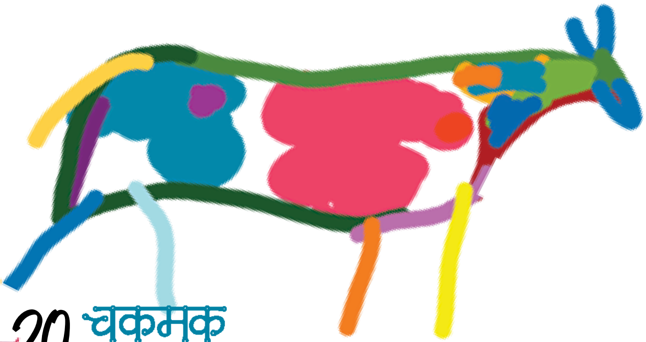

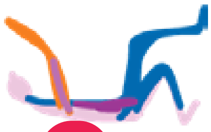

नए साल की नई नमस्ते

जनवरी

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

फरवरी

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28						

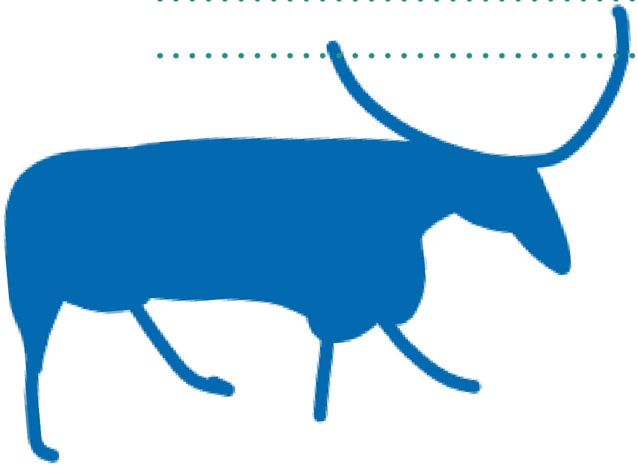

मार्च

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

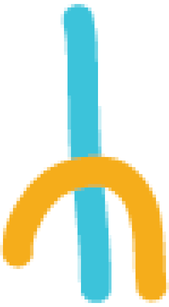

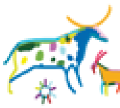

चित्र: iStock.com/ Kudryashka

2021

अप्रैल

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

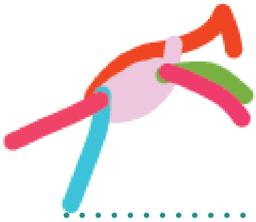

मई

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31					

जून

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

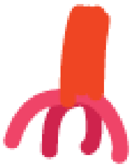

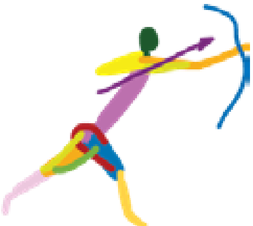

अक्टूबर

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

नवम्बर

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

दिसम्बर

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

चित्र: iStock.com/ Kudryashka

एक कवि का सफर

लोकेश मालती प्रकाश

प्रसिद्ध कवि चेज़्लो मिलोस ने कहा था कि किसी तथ्य की गम्भीरता के प्रति सचेत रहते हुए भी महज़ एक रिपोर्टर बन जाने के प्रलोभन से खुद को बचाना कवियों के लिए सबसे कठिन चुनौतियों में से एक है। यह टिप्पणी उन्होंने बीसवीं सदी की तमाम क्रूरताओं के प्रति कवियों के नैतिक विरोध के बारे में की थी। कविता के बारे में मिलोस की यह टिप्पणी बड़ी सटीक है। सभी कवि इस चुनौती से जूझते हैं। कविता में अपने आसपास की दुनिया की किसी चीज़ पर टिप्पणी करते हुए भी महज़ सपाट बयानी से आगे बढ़कर कविता रच पाना किसी रोमांचक अभियान की तरह होता है, और हर बार यह सफल हो ज़रूरी नहीं। कविता लिखना एक तरह से किसी आविष्कार जैसा है।

तुम सबने एडीसन की कहानी तो पढ़ी ही होगी कि किस तरह बल्ब का आविष्कार करने के लिए उन्होंने सैकड़ों प्रयोग किए। कविता तक पहुँचने के लिए कवि को भी लगातार प्रयोग करते रहना पड़ता है। और शायद इसमें सफलता का अनुपात असफलता से बहुत कम होता है। मगर जो इस प्रयोग में लगातार रमे रहते हैं वे कवि ऐसी कविताएँ रचते हैं जो हमारे समय का गहन दस्तावेज़ बन जाती हैं। हमारा समय जिसमें एक तरफ बड़ी-बड़ी वैश्विक घटनाएँ घट रही हैं जो हमारी मनुष्यता को लगातार कसौटी पर कसती रहती हैं और दूसरी तरफ हमारे बिलकुल नज़दीक हवा की ताल पर झूमते पेड़ और खिलकर मुरझाते फूल भी होते हैं। कवि अपनी कविता में इन सबको दर्ज करते हैं। किसी रपट की तरह नहीं कविता की तरह। इस तरह कविता में वे अनुभव की एक नई दुनिया रचते हैं। हर कविता एक अलग दुनिया। एक-दूसरे से अलग। एक-दूसरे जैसी।

मंगलेश डबराल ऐसे ही कवि थे। अपनी कविताओं में कई संसार रचने वाले हिन्दी कवि ने बीते दिसम्बर में हमारी इस दुनिया को अलविदा कह दिया। वे कोरोना की चपेट में आ गए थे। कवि को याद करना असल में उसकी कविताओं को याद करना होता है और शायद इससे भी ज़्यादा उन अलग-अलग दुनियाओं को याद करना होता है जिसे कवि ने रचा है। रचे जाने के बाद वे सभी हमारी दुनिया बन जाती हैं। हमारी दुनिया में कुछ नया और बेहतर जोड़ने के लिए हम मंगलेश डबराल को हमेशा याद रखेंगे। उनको चकमक टीम की श्रद्धांजलि।

ट्रेनें

मंगलेश डबराल

ट्रेनें अनन्त की ओर जाती दिखती थीं
जैसे वे कभी रुकेंगी नहीं
लेकिन वे रुकती थीं
लोग उनसे उतरते थे
वे अनन्त की ओर जाते हुए दिखते थे
लेकिन रुकते थे वे भी।

मिमिक्री

स्वभाव से नकलची

सोचो कि तुम किसी को यह यकीन दिला सकते हो कि तुम, तुम न होकर कोई और हो – किसी अन्य प्रकार के जीव हो, या पौधा हो।

कई सजीव कुछ और होने या किसी और की तरह व्यवहार करने का ढोंग करते हैं। ऐसा करके ये अपने आप को परभक्षियों का शिकार होने से बचा सकते हैं। साथ ही इससे इन्हें अपने लिए खाना ढूँढ़ने और अपने लिए साथी खोजने में भी मदद मिलती है।

फोटो: एण्ड्रियास् केय

हैं कौन ये जीव?

....

साँप की नकल

कॉमन मॉर्मन

खाने लायक तितली

क्रिमसन् रोज़

ज़हरीली!

खुदगर्ज़ नकलची

प्रकृति में बहुत सारे नकलची मौजूद हैं – ये दूसरों को बेवकूफ बनाने के लिए अलग-अलग तरीकों का इस्तेमाल करते हैं।

- ज़हरीले जीव अक्सर चटक रंगों के होते हैं। इनके ये रंग परभक्षियों के लिए चेतावनी का काम करते हैं – 'मुझसे दूर रहो!' कुछ जीव जो बिना नुकसान के खाए जा सकते हैं इस व्यवस्था का फायदा उठाते हैं। ये ज़हरीले जीवों की नकल करते हैं ताकि परभक्षी बेवकूफ बन जाएँ और उन्हें ज़हरीला समझकर उन पर हमला न करें।

- अलग-अलग किस्म के पक्षियों के अपने-अपने अलार्म कॉल्स होते हैं जिनसे वे दूसरों को खतरे के बारे में सचेत करते हैं। कोतवाल (ड्रोंगो) अपने इर्द-गिर्द के पक्षियों के अलार्म कॉल्स की नकल करता है। जब ये पक्षी इस झूठ-मूठ के खतरे की घण्टी से डरकर भागते हैं तब कोतवाल इनके द्वारा छोड़े हुए कीड़ों को खाने के लिए झपट्टा मारता है।

- और कुछ ऐसे जीव भी हैं जो दूसरे जीवों की गन्ध की नकल कर सकते हैं। कुछ नर चींटियाँ मादा चींटियों की गन्ध की नकल करते हैं ताकि दूसरे नर चींटियाँ उन पर हमला न करें। और कुछ मकड़ियाँ नर पतंगों को अपने जाल में फँसाने के लिए मादा पतंगों की गन्ध की नकल करते हैं।

nature conservation foundation

science for conservation

अनुवाद: मुदित श्रीवास्तव

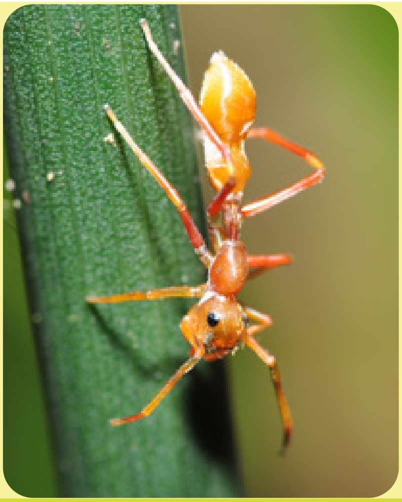

....

चींटी की नकल

....

ततैये की नकल

....

मधुमक्खी की नकल

तुम्हें क्या लगता है – ये साँप, चींटी, ततैया और मधुमक्खी की नकल क्यों कर रहे हैं? हमें ज़रूर लिख भेजना।

फील्ड डायरी के लिए

इस काम में थोड़ा शोरगुल हो सकता है। इसलिए अपनी डायरी लेकर बाहर निकल जाओ।

तोता और पहाड़ी मैना इन्सानों की आवाज़ें निकाल सकते हैं। कुछ ड्रोंगो भी इन्सानों की तरह सीटी बजा सकते हैं। चलो, देखते हैं कि तुम कुछ जीवों और पक्षियों की कितनी अच्छी नकल कर सकते हो।

अलग-अलग पक्षियों, गिलहरियों, छिपकलियों, पतंगों और मेंढकों की आवाज़ें सुनो। आवाज़ों को पहचानने की कोशिश करो और देखो कि ये आवाज़ें कौन निकाल रहा है। उनके नाम अपनी फील्ड डायरी में नोट कर लो।

अब, उनकी नकल करने की कोशिश करो। ज़रूरी नहीं है कि तुम केवल अपनी आवाज़ का ही इस्तेमाल करो। तुम सीटी बजाकर, टहनियों से पत्थरों को बजाकर या किसी और तरह से भी आवाज़ें निकाल सकते हो। देखो क्या तुम्हें कहीं से कोई जवाब मिलता है?

हमें अपनी मिमिक्री के बारे में ज़रूर बताना।

प्रतियोगिता

छद्मावरण (कैमोफ्लाज) भी एक तरह की नकल है जिसके कारण जीवों को ढूँढ़ पाना मुश्किल हो जाता है। ऐसा करने पर जीव अपने आसपास के वातावरण की ही किसी चीज़ की तरह दिखते हैं, जैसे कि कोई टहनी, पत्थर, किसी पेड़ की छाल की तरह।

बाहर निकलो और अपने बगीचे में तहकीकात करो। पौधों और कूड़े के आसपास देखो। अगर तुम्हें कोई ऐसा जीव मिले जो अपने आसपास की चीज़ों में घुलने-मिलने की कोशिश कर रहा है तो अपनी फील्ड डायरी में उसका विवरण लिखो और चित्र बनाओ।

अपनी डायरी के चित्र व नोट्स हमें chakmak@eklavya.in पर भेजो और भारतीय तितलियों पर एक किताब जीतने का मौका पाओ।

स्कूल
खोलें या ना खोलें

सुशील जोशी

पिछले 9 महीनों से देश के स्कूल कमोबेश बन्द पड़े हैं। कहने को तो ऑनलाइन क्लास की व्यवस्था की गई है लेकिन उसकी अपनी समस्याएँ हैं। वैसे तो केन्द्र सरकार ने अक्टूबर में आदेश जारी कर दिए थे कि राज्य अपने विवेक के अनुसार स्कूल खोलने का निर्णय ले सकते हैं किन्तु अधिकांश राज्यों ने स्कूल ना खोलने या आंशिक रूप से खोलने का ही निर्णय लिया है। इस सन्दर्भ में मुख्य सवाल यह है कि स्कूल खोलने या बन्द रखने का निर्णय किन आधारों पर लिया जाएगा।

स्कूल तुरन्त नहीं खोलते हैं तो?

स्कूल बन्द रखने का मतलब होगा कि देश के पन्द्रह लाख से ज़्यादा स्कूलों में दाखिल अट्ठाईस करोड़ बच्चे घरों में बन्द रहेंगे और सम्भव हुआ तो ऑनलाइन कुछ सीखने की कोशिश करेंगे। लेकिन देश में ज़्यादातर घरों में इंटरनेट कनेक्शन नहीं है जिसके माध्यम से ऑनलाइन शिक्षा तक पहुँच बनाई जा सकती है। स्मार्टफोन वगैरह भी काफी कम परिवारों के पास हैं और यदि हैं भी, तो वे पूरे परिवार के इस्तेमाल के लिए हैं। ज़ाहिर है, ऐसे में ग्रामीण बच्चे, लड़कियाँ और शहरी गरीब बच्चे पिछड़ जाएँगे।

ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम उपलब्ध होने के बावजूद भी शायद बच्चे उतने अच्छे-से ना सीख पाएँ क्योंकि घर के परिवेश में कई अन्य दबाव भी काम करते हैं। यदि बच्ची/बच्चा स्कूल चला जाए तो उतने घण्टे तो समझिए, 'सीखने' के लिए आरक्षित हो गए। लेकिन वह घर पर ही है तो कई अन्य प्राथमिकताएँ सिर उठाने लगती हैं। वैसे बच्चे स्कूल सिर्फ 'पढ़ाई' करने नहीं जाते। स्कूल हमजोलियों से मेलजोल का एक स्थान भी होता है जहाँ तमाम तरह के खेलकूद होते

हैं, रिश्ते-नाते बनते हैं। यह बात कई अध्ययनों में उभरी है कि हमेशा माता-पिता की निगरानी में रहना और हमउम्र बच्चों के साथ मेलजोल ना होना बच्चों के लिए मानसिक दबाव पैदा कर रहा है और मनोवैज्ञानिक समस्याएँ भी।

एक मुद्दा मध्याह्न भोजन यानी मिड डे मील का भी है। इसके तहत दिन में एक बार कक्षा 1 से 8 तक के सारे स्कूली बच्चों को पौष्टिक भोजन प्राप्त होता है। इनकी संख्या करीब 6 करोड़ होगी। इतने ही बच्चों को आँगनवाड़ी से भोजन दिया जाता है और वे भी बन्द हैं। यह उनके पोषण स्तर को बेहतर करने में एक महत्वपूर्ण योगदान देता है। हो सकता है यह योजना बहुत अच्छी तरह से लागू ना हुई हो, फिर भी इसने स्कूली बच्चों की सेहत पर सकारात्मक असर डाला है। स्कूल बन्द मतलब मिड डे मील भी बन्द। भारत में कुपोषण की स्थिति को देखते हुए यह एक बहुत बड़ा व महत्वपूर्ण नुकसान है।

कुल मिलाकर स्कूल बन्द रहने का मतलब है बच्चों के लिए संज्ञानात्मक विकास और तन्दुरुस्ती में ज़बर्दस्त नुकसान। खेलकूद और हमउम्र बच्चों से मेलजोल के अभाव वगैरह का मनोवैज्ञानिक असर तो हो ही रहा है। इसके अलावा, कई संस्थाओं ने आशंका व्यक्त की है कि यदि यह साल इसी तरह गया तो 2021 में बड़ी संख्या में बच्चे शायद स्कूल ना लौटें, नए दाखिलों की तो बात ही जाने दें। स्कूलों में दाखिलों को लेकर जो प्रगति पिछले एक-डेढ़ दशकों में हुई है वह शायद वापिस पुरानी स्थिति में पहुँच जाए। एक यह भी शंका व्यक्त की गई है कि इस तरह स्कूल बन्द रहने से बाल-विवाह में भी वृद्धि की सम्भावना है।

स्कूल खोल देंगे तो कोविड-19 और तेज़ी-से बढ़ेगा, है ना?

स्कूलों को आंशिक रूप से खोला जा सकता है यानी कुछ कक्षाएँ शुरू कर देना या प्रत्येक कक्षा में सीमित संख्या में विद्यार्थियों को आने देना। लेकिन इसके पक्ष में काफी दलीलों के बावजूद यदि सरकारें स्कूलों को नहीं खोल रही हैं, तो यकीनन कुछ कारण होंगे। सरकार तो सरकार, माता-पिता भी कह रहे हैं कि स्कूल खुलेंगे तो भी वे अपने बच्चों को नहीं भेजेंगे। एक सर्वेक्षण में 70 प्रतिशत अभिभावकों ने यह राय व्यक्त की है। वैसे यदि पालकों को कहा जाएगा कि वे बच्चों को स्कूल अपनी ज़िम्मेदारी पर ही भेजें, तो पालकों का कोई अन्य जवाब हो भी नहीं सकता। कई स्कूल प्रबन्धन भी ऐसा ही सोचते हैं। और इन सबकी हिचक का प्रमुख (या शायद एकमात्र) कारण है कि स्कूल में भीड़भाड़ होगी, बच्चों के बीच निकटता होगी, बच्चे मास्क वगैरह भूल जाएँगे और खुद संक्रमित होंगे, और संक्रमण को घर ले आएँगे। कहा जा रहा है कि स्कूल संक्रमण प्रसार के अड्डे बन जाएँगे। इसी मूल चिन्ता के चलते समाज में स्कूल खोलने के विरुद्ध माहौल बना है। तो सवाल है कि यह चिन्ता कितनी जायज़ है।

पिछले दिनों कई देशों में स्कूल पूर्ण या आंशिक रूप से खोले गए हैं। भारत में भी कुछ राज्यों ने स्कूल खोले हैं। कहना न होगा कि स्कूल खोलने को लेकर केन्द्र सरकार द्वारा प्रोटोकॉल जारी किए गए हैं और शायद शत प्रतिशत नहीं लेकिन इनका पालन भी हुआ है। तो उनसे किस तरह के आँकड़े व अनुभव मिले हैं।

एक अध्ययन में 191 देशों के अनुभवों का विश्लेषण किया गया है। जिन देशों का अध्ययन किया गया उनमें से कम से कम 92 देशों में स्कूल खोले गए हैं। इनमें से कुछ देश तो ऐसे भी थे जहाँ कोविड-19 काफी अधिक था। 52 देशों का विश्लेषण बताता है कि संक्रमण दर बढ़ने का स्कूल खुलने से कोई सम्बन्ध नहीं दिखता। इसके लिए अन्य परिस्थितियों पर विचार करना होगा।

भारत में कुछ राज्यों ने स्कूल खोलने का निर्णय लिया है। अधिकांश राज्यों में कक्षा नौवीं तथा उससे ऊपर की कक्षाओं को ही शुरू किया गया है। इस

सन्दर्भ में आन्ध्र प्रदेश की रिपोर्ट है कि वहाँ स्कूल खुलने के बाद राज्य के कुल 1.89 लाख शिक्षकों में से लगभग 71 हज़ार की जाँच की गई और उनमें से 829 (1.17 प्रतिशत) पॉज़िटिव पाए गए। कुल 96 हज़ार विद्यार्थियों की जाँच में 575 (0.6 प्रतिशत) पॉज़िटिव निकले। राज्य के शिक्षा आयुक्त ने माना है कि ये आँकड़े कदापि चिन्ताजनक नहीं हैं क्योंकि पहली बात तो यह है कि शिक्षकों की जाँच स्कूल खुलने से पहले की गई थी जिसके परिणाम स्कूल खुलने के बाद आए हैं।

अब तक उपलब्ध आँकड़ों से नहीं लगता कि स्कूल सुपरस्प्रेडर स्थान हैं। दरअसल ऐसा लगता है कि स्कूल अपने इलाके के सामान्य रुझान को ही प्रतिबिम्बित करते हैं। अधिकांश देशों में, और खासकर यू.एस. व यू.के. में वैज्ञानिकों का मत है कि कहीं-कहीं स्कूल खुलने के बाद संक्रमण दर में वृद्धि हुई है लेकिन इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि ऐसा स्कूल खुलने के कारण हुआ है। साथ ही वे कहते हैं कि इस बात का भी कोई प्रमाण नहीं है कि इसमें स्कूलों की कोई भूमिका नहीं रही है।

स्कूल सुपरस्प्रेडर स्थान क्यों नहीं हैं?

महामारी और स्कूल खोलने के सन्दर्भ में एक महत्वपूर्ण सवाल यह उठता रहा है कि क्या बच्चे कम संक्रमित होते हैं और संक्रमण को कम फैलाते हैं। सामान्य आँकड़ों से पता चला है कि संक्रमित लोगों में बच्चे सबसे कम हैं।

इसकी कई व्याख्याएँ प्रस्तुत की गई हैं और काफी मतभेद भी हैं। कुछ विशेषज्ञों का मत है कि बच्चों की प्रतिरक्षा प्रणाली अप्रशिक्षित होने की वजह से वे सुरक्षित रहते हैं। इसके विपरीत कुछ लोगों का कहना है कि यदि ऐसा होता तो वे अन्य संक्रमणों से भी सुरक्षित रहते लेकिन हकीकत अलग है। कुछ लोगों को कहना है कि बच्चों के फेफड़ों की कम कोशिकाओं में वे ग्राही (ACE2 ग्राही) होते हैं जो कोरोनावायरस को कोशिका में प्रवेश का रास्ता प्रदान करते हैं। यह भी कहा गया है कि बच्चे संक्रमण को बहुत अधिक नहीं फैलाते क्योंकि उनके फेफड़े छोटे होते हैं और उनकी छींक या खाँसी के साथ निकली बूँदों में वायरस की संख्या कम होती है और ये बूँदें बहुत दूर तक नहीं जातीं।

बहरहाल, मामला यह है कि अधिकांश आँकड़े दर्शाते हैं कि स्कूल कोविड-19 वायरस फैलाने के प्रमुख या बड़े स्रोत नहीं हैं। यह भी स्पष्ट है कि स्कूलों के बन्द रहने का शैक्षणिक व स्वास्थ्य सम्बन्धी खामियाज़ा खास तौर से गरीब व वंचित तबके के बच्चों को भुगतना पड़ रहा है। इसलिए इस मुद्दे को मात्र प्रशासनिक सहूलियत के नज़रिए से ना देखकर व्यापक अर्थों में देखकर निर्णय करने की ज़रूरत है।

स्रोत फीचर्स से साभार

चित्र: आयुष गुप्ता, छठवीं, दिल्ली पब्लिक स्कूल, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

मूर्ख गाय

कार्तिक गुप्ता, तीसरी
दिल्ली पब्लिक स्कूल
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

एक दिन एक गाय नदी के किनारे घास खा रही थी। तभी एक शेर आ गया। गाय उसे देखकर भागने लगी। शेर सोचने लगा कि गाय मुझसे डरकर क्यों भागने लगी, जबकि मैं नदी किनारे पानी पीने आया हूँ। शेर उत्सुकतावश गाय के पीछे जाने लगा। गाय भागते-भागते एक खाई के पास पहुँच गई और उसके पास बचने का कोई रास्ता न रह गया। तब शेर गाय के पास पहुँच गया और बोला, "अरे गाय! तुम भाग क्यों रही हो?" गाय ने कहा, "तुम मुझे मारकर खाने के लिए मेरा पीछा कर रहे हो। इसलिए मैं अपनी जान बचाने के लिए भाग रही हूँ।" शेर बोला कि मैंने अपना शिकार कर लिया है और अब मुझे भूख नही लगी है। मैं तो पानी पीने नदी के पास आया था। गाय यह उत्तर सुनकर चौंक जाती है। गाय को लगता है कि शेर उसे अपने जाल में फँसा रहा है। बिना कुछ समझे वो फिर से दूसरी तरफ भागने लगी। शेर ऐसा देखकर हैरान हो जाता है। तब तक देर रात होने लगी और शेर अपनी गुफा में जाने के रास्ते चल पड़ा। गाय शेर की बातों पर बिलकुल भी भरोसा नही कर पाई क्योंकि वो सोचती थी कि सारे शेर एक जैसे ही होते हैं।

मेरा पन्ना

कहाँ गए वो दिन

शुभ मालवीय, पाँचवीं, सेंट मोंटफोर्ट स्कूल
भोपाल, मध्य प्रदेश

मेरे नए दोस्त

शीतल, पाँचवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

एक दिन शाम के समय दादाजी एक मुर्गी ले आए। वह मुर्गी बहुत सुन्दर थी। एक दिन उसने एक अण्डा दिया। दादाजी ने उसे सँभालकर रखा। जब मैंने उनसे पूछा तो उन्होंने कहा कि अगर मुर्गी ऐसे ही अण्डे देती रही तो मुर्गी उनसे बच्चे निकालेगी। ऐसे ही दिन बीतते रहे। और 3 अण्डे जमा हुए। दादी ने उन्हें मुर्गी के साथ छोड़ दिया। ऐसे ही दो दिन हुए। और एक सुबह तीन छोटे चूज़े मरे हुए दिखे। किसी को कुछ समझ नहीं आया कि वह कैसे मरे। मैंने दादाजी से पूछा कि वो कैसे मरे। तब बाद में पता चला कि जब मुर्गी दूसरी जगह सो रही थी तब साँप आया था। और मारकर चला गया। दादी ने फिर 3 अण्डे रखे और दादाजी ने उनके घर के सारे छेद बन्द कर दिए। और फिर बहुत जल्द चूज़े निकल आए। अब मैं उनके साथ खेलती रहती हूँ।

चित्र: राजनन्दिनी चौबे, दूसरी, भोपाल, मध्य प्रदेश

पहले थी हमें पूरी छूट। पर कहाँ गए वो दिन जब हम सुबह दोस्तों के गले में हाथ डालकर निकल जाते थे। कहाँ गए वो दिन जब अध्यापक हमें कोई पाठ पढ़ाते थे और हम उसे अध्यापक के साथ-साथ दोहराते थे। जब दोस्त 5 बजे बुलाने आते थे और हम माँ से पूछकर बाहर निकल जाते थे। कहाँ गए वो दिन जब हम दोस्तों के संग बारिश में कूद-कूदकर नहाते थे। नदी पूरी भर जाती और हम उसमें डुबकी लगाते थे। पहले थी हमें पूरी छूट जाने कहाँ-कहाँ हम जाते थे।

माथापच्ची

1. इनमें से कौन-से दस्ताने का जोड़ीदार नहीं है?

2.

अमावस की रात है। चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा है। तुम एक सुनसान सड़क पर कार के अन्दर हो। सड़क पर दूर-दूर तक और कोई नहीं है। बेसबॉल के एक बैट के अलावा तुम्हारे पास और कुछ भी सामान नहीं है। ऐसे में तुम कार से बाहर कैसे आओगे?

3. 1 से लेकर 7 तक की संख्याओं को जोड़कर 100 उत्तर लाने का एक तरीका है:

1 + 23 + 4 + 5 + 67 = 100

क्या तुम ऐसा ही कोई और तरीका खोज सकते हो?

4. दोनों में से कौन-सी घड़ी असली है?

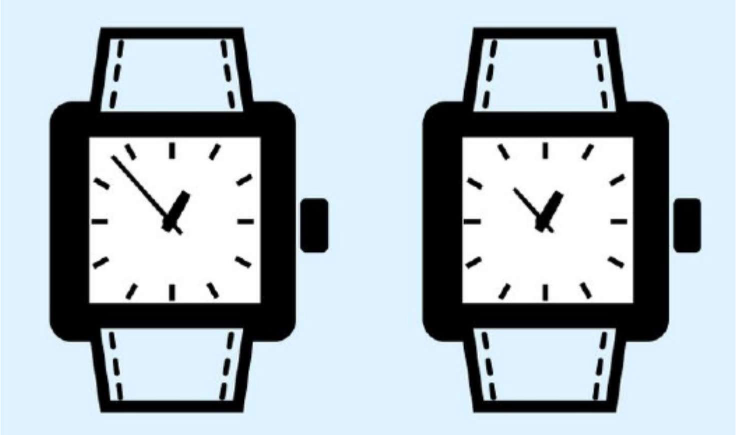

5. एक बड़े-से डिपार्टमेंटल स्टोर में एक आदमी ने बास्केट में ऊपर तक सामान भरा और बिना पैसे दिए बाहर जाने लगा। दुकान के मालिक ने उसे बाहर जाते देख भी लिया। पर ना तो उसे रोका और ना ही पुलिस को बुलाया। ऐसा क्यों?

6. हाना इन पेड़ों को इस तरह लगाना चाहती है कि कुल 5 पंक्तियाँ हों और हरेक पंक्ति में 4 पेड़ हो। क्या तुम उसकी मदद कर सकते हो?

7. अयान ने अपने दोस्त से शर्त लगाई कि अगर मैं तुम्हारा सही वज़न इस पेपर पर लिख दूँ तो तुम मुझे 50 रुपए देना। लेकिन यदि मैं नहीं नहीं लिख पाया, तो मैं तुम्हें 50 रुपए दूँगा। उसके दोस्त ने कि देखा आसपास तौलने का कुछ भी सामान नहीं है। उसने सोचा यह जितना भी वज़न लिखेगा, मैं अपना वज़न उससे कम या ज़्यादा बता दूँगा। और शर्त के लिए हामी भर दी। आखिर में उसे अयान को 50 रुपए देने पड़े। अयान ने यह शर्त कैसे जीती?

8. नीचे दिए गए शब्दों के बीच की खाली जगह में तुम्हें दो अक्षर का ऐसा शब्द भरना है जिसे पहले वाले शब्द के बाद में जोड़ने और दूसरे वाले शब्द के पहले जोड़ने से नए सार्थक शब्द बनें। जैसे कि बो (तल) वा से बने दो शब्द हैं: बोतल और तलवा

बच (.............) घट

चाल (.............) गर

कर (.............) वार

सर (.............) रत

मर (.............) हल

फटाफट बताओ

कहाँ पर गुरुवार, बुधवार से पहले आता है?

(शब्दकोश में)

जितना तुम आगे बढ़ते जाते हो, उतने ही पीछे छोड़ते जाते हो?

(पैरों के निशान)

ऐसा क्या है जिसमें से जितना निकालो वह उतना ही बड़ा होता जाता है?

(गड्ढा)

एक कमरे में चार सौ लोग थे। उनमें से दो सो गए तो बताओ कमरे में कितने लोग थे?

([illegible])

जब मैं साफ होता हूँ तो काला होता हूँ और जब गन्दा होता हूँ तो सफेद होता हूँ। कौन हूँ मैं?

(ब्लैकबोर्ड)

क्या है, जिसकी चार उँगलियाँ और एक अँगूठा है, पर उसमें जान नहीं है?

(दस्ताना)

चित्र पहेली

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

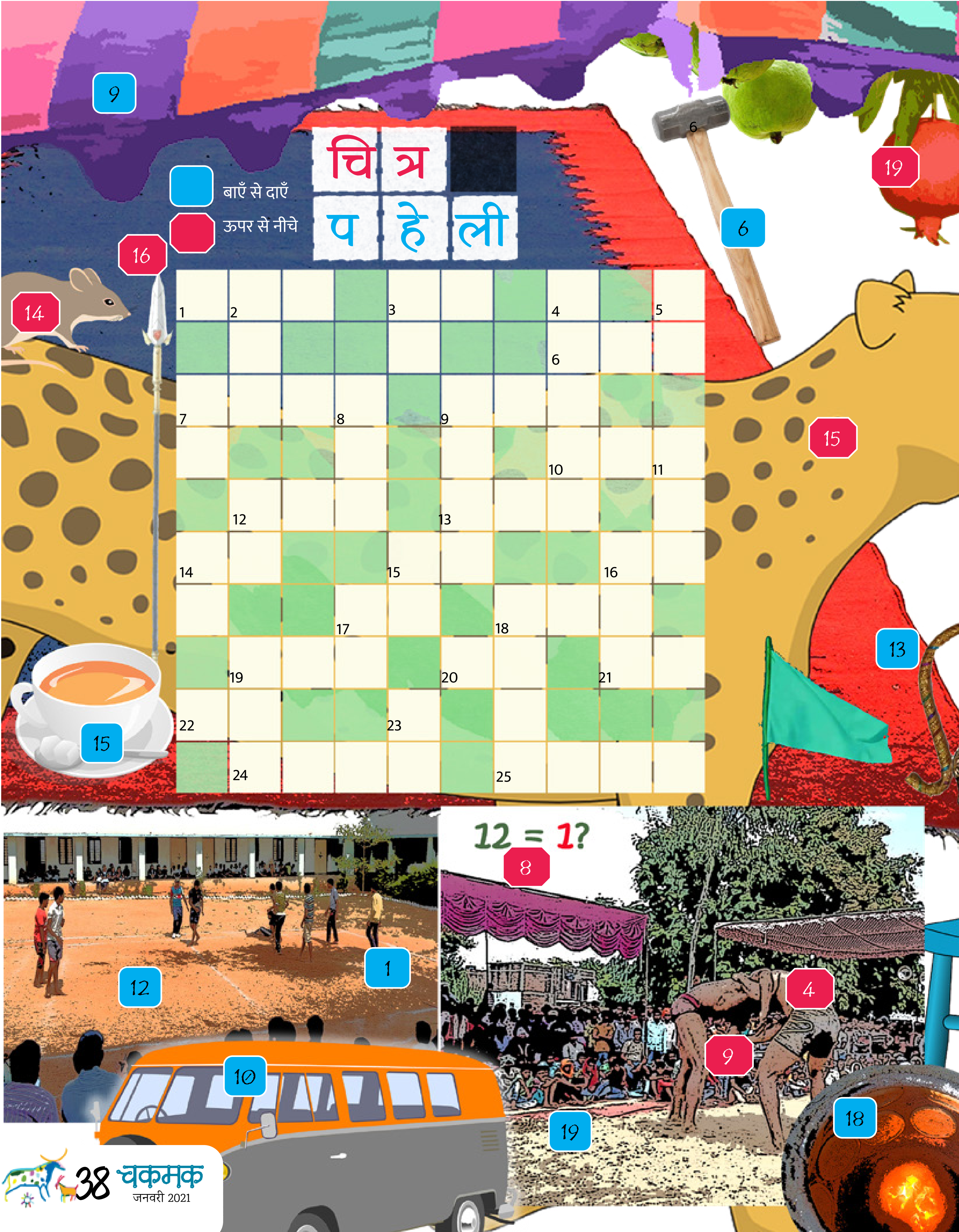

सुडोकू-38

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

6		9		5		1	8	
	8	2			6	7	3	
4	3		7			6	9	2
	2		6	1	3	5		
7						3		1
3	1	6		7		8	2	
8					4	9	1	
	9	3	1			4	5	8
		1	8				7	

मेरा पन्ना

चित्र: राजेश्वरी भिरंगी, तीसरी, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

भइये

प्रिया पटेल, प्राथमिक विद्यालय धुसाह - प्रथम,
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मैं बलरामपुर में रहती हूँ। और यहाँ पर हमारे पास घर नहीं था रहने के लिए। इसीलिए हम यहाँ से आठ सौ किलोमीटर दूर लुधियाना गए थे। वहाँ पर हम किराए के एक छोटे-से कमरे में रहते थे। जब मैं लुधियाना वाली ट्रेन में जा रही थी तो मैंने अपने मन में बहुत-सी बातें सोच रखी थीं कि मैं बहुत जगह घूमने जाऊँगी और नए कपड़े भी खरीदूँगी।

मेरे पापा वहाँ पर लोहे की फैक्ट्री में काम करते थे। और सुबह 8 बजे जाते और रात को 9 बजे आते थे। ऐसे वहाँ तीन साल बीत गए पर मैं कहीं घूम नहीं पाई। मैं बस एक बार अमृतसर में स्वर्ण मन्दिर दर्शन करने गई थी।

रविवार को वहाँ बिजली चली जाती थी तो पानी की बहुत दिक्कत हो जाती थी। पड़ोस के लोग हमें 'भइये' कहते थे और हमें पानी नहीं देते थे। इसलिए वहाँ मेरी कोई सहेली नहीं बनी।

कोरोना आ जाने से हमें बहुत मुश्किलें उठानी पड़ीं। पापा को तन्ख्वाह मिलना बन्द हो गई। हम लोग ट्रेन में बैठकर किसी तरह वापिस आ पाए। हमारे पास पैसे बिलकुल नहीं बचे थे। आधार कार्ड की वजह से हम फ्री में घर तक पहुँच गए। यहाँ से जाते वक्त दादी के लिए शॉल खरीदने की सोचा था। परन्तु ऐसे बुरे हालात में आना पड़ा कि ले नहीं पाई।

चूहे का तहलका

हर्षिता कौशले, दसवीं, केन्द्रीय विद्यालय
देवास, मध्य प्रदेश

चित्र: सहरीन बानो, चौथी, अपना तालीम घर, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

यही कोई चार-पाँच दिन पहले हमारे घर में एक चूहा घुस आया था। उसे सबसे पहले दादी ने देखा था। बस फिर क्या अगले ही दिन सब जुट गए उसे ढूँढ़ने में। घर का सारा सामान इधर-उधर कर दिया। वो शैतान चूहा तो नहीं मिला। पर घर के अलग-अलग कोनों से कुतरे हुए टमाटर ज़रूर मिले। दोपहर में जब हम हॉल में आराम कर रहे थे तो दबे पाँव वह चूहा आगे के कमरे में आया पर क्योंकि दरवाज़ा बन्द था तो वह वापिस पीछे चला गया।

तब ऐसे ही बैठे-बैठे मैंने कल्पना की कि वह चूहा हमारे घर में दस साल बिता चुका है। टमाटर खा-खाकर वो चूहा इतना बड़ा और डरावना हो गया है कि किसी ब्रह्मराक्षस से कम नहीं लगता। उसे भगाने का हर तरीका फेल हो चुका है। ऐसा लगता है कि उसे हमारा घर भा गया है। लेकिन यह तो मेरी कल्पना थी। ऐसा सच में थोड़े ही होता है।

असल में तो अगली रात हमने चूहेदानी लगाई और वह उसमें कैद हो गया। फिर हम उसे पुलिस ग्राउण्ड में छोड़ आए। तब जाकर फाइनली हमारे घर में शान्ति हो पाई।

माथापच्ची

जवाब

1.

2. कार का दरवाज़ा खोलकर, और कैसे।

3. 1 + 2 + 34 + 56 + 7 = 100

4. बाईं तरफ वाली घड़ी नकली है, उसका मिनट वाला काँटा कुछ ज़्यादा ही लम्बा है। जब वो बारह के अंक पर पहुँचेगा तो आगे नहीं घूम पाएगा।

5. क्योंकि वह उस स्टोर में काम करती था और बेकार हो गए सामान को कार्ट में डालकर बाहर ले जा रहा था।

6.

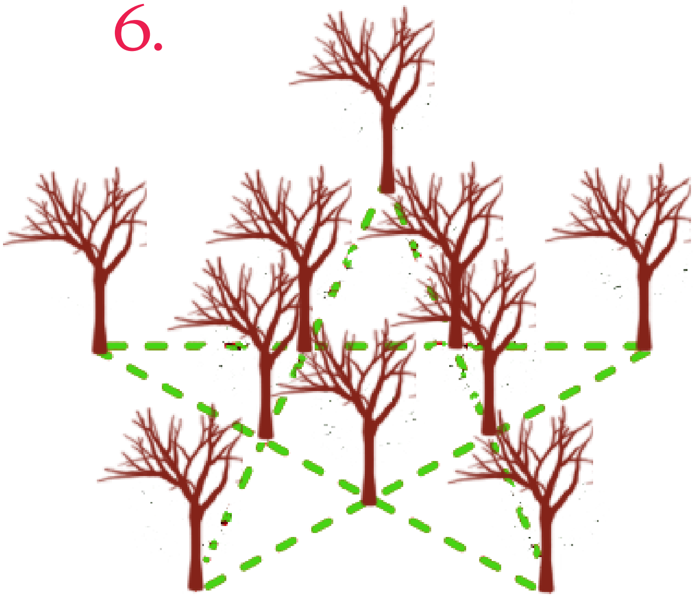

7. उसने कागज़ पर लिखा था 'तुम्हारा सही वज़न'।

8.

बच (पन) घट

चाल (बाज़ी) गर

कर (तल) वार

सर (कस) रत

मर (कट) हल

दिसम्बर की चित्रपहेली का जवाब

1 अ	ला	व			2 को	य	3 ला		4 सू
ख			5 जै	6 कि	ट		लि		र
7 रो	श	8 नी		री		9 इ	मा	10 र	त
ट		11 ल	प	ट		स्त्री		ज़ा	
		गा			12 प			13 ई	14 ख
	15 चा	य		16 फु	ट		17 सौं		जू
18 फ	र		19 चु	ग्गा		20 म	फ	21 ल	र
	22 पा	ल	क		23 आ	क		बा	
24 रु	ई		न्द			ब		25 दा	26 ना
सी		27 सा	र	स		28 रा	ख		प

सुडोकू-37 का जवाब

5	9	4	7	2	1	6	8	3
3	8	2	9	6	4	7	1	5
1	7	6	3	8	5	2	4	9
2	4	3	8	7	9	5	6	1
7	1	5	4	3	6	9	2	8
9	6	8	5	1	2	3	7	4
6	3	1	2	9	8	4	5	7
8	5	7	6	4	3	1	9	2
4	2	9	1	5	7	8	3	6

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23

नए साल की नई नमस्ते

प्रभात

इतना ज़्यादा जाड़ा है भाई
मुझसे होती नहीं नमस्ते।

अगर नमस्ते हो पाती तो
क्या मैं करता नहीं नमस्ते।

नए साल की नई नमस्ते
करता तुमको कई नमस्ते।

कोहरे की आँधी है बाहर
पहुँच सकेगी नहीं नमस्ते।

रस्ते में ही रह जाएगी
अभी बर्फ गिर रही, नमस्ते।

प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन